Total No. of Printed Pages—4

2 SEM TDC HINH (CBCS) C 3

2026

(May/June)

HINDI

(Core)

Paper : C–3

(आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता)

Full Marks : 80

Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) विद्यापति की 'पदावली' किस भाषा में लिखी गई है?

(ख) मीराबाई ने किसे अपना पति मान लिया था?

(ग) रसखान का मूल नाम क्या था?

(घ) कबीर किसके शिष्य थे?

(ङ) 'पद्मावत' किस कवि की रचना है?

(च) हिन्दी साहित्याकाश में चन्द्रमा का स्थान किस कवि को दिया गया है?

(छ) 'भ्रमरगीत' के रचयिता कौन हैं?

(ज) कवि बिहारीलाल किसके दरबारी कवि थे?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×4=12

(क) "विद्यापति भक्त कवि हैं या शृंगारी"—सतर्क उत्तर दीजिए।

(ख) सूफी काव्यधारा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिए।

(ग) मीराबाई की भक्ति-भावना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(घ) रहीम के दोहे का मुख्य अर्थ क्या है? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

(ङ) "कबीर को बाह्याडम्बर से चिढ़ थी।"—उक्त कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।

(च) "बिरह वर्णन की दृष्टि से भ्रमरगीत प्रसंग बेजोड़ है।"—सतर्क उत्तर दीजिए।

(छ) "कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाई।
उहिं खाए बोराई जग, इहि पाए बोराई।।"

—भाव स्पष्ट कीजिए।

(ज) घनानन्द की प्रेम-भावना पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) "नन्दक नन्दन कदम्बक तरु-तर, धिरे धिरे मुरलि बजाव।
समय संकेत-निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव।।
सामरि, तोरा लागि अनुखन विकल मुरारि।
जमुनाक तिर उपवन उदवेगल फिर फिर ततहि निहारि।।
गोरस बेचए अबइत जाइत जनि जनि पुछ बनमारि।।"

(ख) "मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।"

(ग) "नागमती चितउर पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कीन्हन फेरा।।
नागर काहु नारि बस परा। तेइ मोर पिउ मोसी हरा।।
सुआ काल होई लेइगा पीऊ। पीऊ नहिं आत, जात बरु जीऊ।।
जगहन दिवस घटाः निसि बाढ़ी। दुभर रैनि जाइ किमि काढ़ी।।
अब यहि बिरह दिवस भा राती। जरौ बिरह जस दीपक बाती।।
काँपे हिया जनावै सीऊ। तो पै जाइ होइ संग पीऊ।।"

(घ) "मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज की पंछी, फिरि जहाज पर आवै।।
परम गंग कौ छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिंहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ क्यौ करील फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।"

(ङ) "अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलै तजिं आपनपौ, झिझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।"

(च) "संगति सुमति न पावही, परे कुमति के कंध।
राखौ मेलि कपूर मैं, हींग न होत सुगंध।
बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाई।
सौंह करै भौंहन हँसे देन कहे नटि जाई।"

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 7×4=28

(क) विद्यापति की पदावली के काव्य-सौष्ठव का विवेचन कीजिए।

(ख) कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(ग) जायसी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

(घ) भ्रमरगीत परम्परा में सूर का स्थान निर्धारित कीजिए।

(ङ) "गोस्वामी तुलसीदास समन्वयवादी कवि थे।"—इस कथन की पुष्टि पठित पाठ के आधार पर कीजिए।

(च) कवि बिहारीलाल का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(छ) घनानन्द के वियोग वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

★★★